रावर्टसगंज। जनपद न्यायाधीश विष्णुकांत पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुमन।

कबनूर -इचलकरंजी। विधायक सुरेशराव हालवनकर का पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत करते हुए ब्र.कु.रूपा।

नदवई-भरतपुर। पार्षद सुभाष जिंदल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कमलेश व ब्र.कु.संतोष।

आपकी खुशी आपके पास

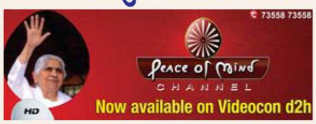

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 18602331035, 83020222022, channel-697

सूचना- ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें - M-8107119445
Email - mediabkm@gmail.com

प्रश्न - ब्रह्मा बाबा के प्रति सभी ब्रह्मा वत्सों का प्यार व सम्मान था, हम इसका कारण जानना चाहते हैं?

उत्तर - वो श्रेष्ठ धारणा थी, सबसे अपनापन। सभी कहते थे कि बाबा तो मेरा है, वे मुझे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। क्योंकि वे प्रजापिता हैं, सभी उनके बच्चे हैं, इसलिए उनके मन में सभी के लिए प्यार व शुभ-भावनाएं हैं। चाहे कोई किसी भी धर्म या जाति का हो, वे सभी के लिए श्रेष्ठ भावनाएं रखते थे। क्योंकि उनके चित्त में एक ही था -मेरा शिव बाबा। तो सभी के चित्त में भी यही था मेरा ब्रह्मा बाबा। क्योंकि उनमें मैं-पन नहीं था, अत: सबको लगता था कि वे मेरे हैं।

प्रश्न - मेरा चित्त शांत नहीं रहता। मुझे शान्ति नहीं मिल रही तथा मेरा योग भी नहीं लगता, क्या करूं?

उत्तर -अवश्य ही आपने अपने चित्त में गंदगी भर ली है। हमारा मन-बुद्धि हमारे मंदिर हैं, इन्हें स्वच्छ रखना चाहिए, परन्तु जो मनुष्य इनमें गंदगी भर लेता है वह उस गंदगी के कारण परेशान व अशांत रहता है। अत: अपने मन को स्वच्छ करो। इससे ईर्ष्या-द्वेष, वैर-भाव, घृणा-नफरत, तेरा-मेरा, अवगुणी-दृष्टि, क्रोध आदि विकारों को निकालो। मन-मंदिर में ज्ञान का दीप जलाये रखो। बहुत इंतजार के बाद तो प्रभु-मिलन हुआ, उसका सत्य ज्ञान मिला, अब भी यदि मन-मंदिर में दीप नही जलाएंगे तो भाग्यवान नहीं बन पायेंगे।

आप शायद कहें कि इन बुराइयों को निकालना कठिन है। परन्तु नहीं, ये उनके लिए सहज हैं जो इन्हें निकालना चाहते हैं। गन्दगी चाहे कितनी भी हो, सुगंध के सामने ठहरती नहीं। लक्ष्य बनाओ...अब शिवबाबा से सर्वस्व पाना है तो बातें पीछे छूट जाएंगी। जो बातों में रहते हैं उन्हें कभी शान्ति नहीं मिल सकती।

प्रश्न:- बाबा ने कहा कि सकाश देने की सेवा में लग जाओ तो तुम निर्विघ्न बन जायेंगे। ये कैसे होगा?

उत्तर:- सकाश देने की सेवा करने से सर्वप्रथम तो हमारा योग अभ्यास बड़ा सरल हो जायेगा। दूसरा - जीवन की परेशानियां, उलझनें, अकेलापन व बंधन भी समाप्त हो जायेंगे। तीसरा - हमारे पावरफुल वायब्रेशन्स से विश्व की अनेक आत्माओं को सहयोग मिलेगा, जो कि बहुत बड़ा पुण्य होगा। ऐसा पुण्य सदा करने से पाप का दबाव भी कम होगा और जीवन के विघ्न व बंधन भी कट जायेंगे।

प्रश्न:- बाबा ने कहा तुम पूर्वज हो। तुम्हें सभी धर्मों की आत्माओं की पालना करनी है। तुम जड़ में बैठे हो। हमें ये बात स्पष्ट समझाएं। कैसे हमें सकाश देनी है?

उत्तर:- हम देव कुल की आत्माएं, सबसे पहले सतयुग में धरा पर आये। हम एक से दो, दो से चार, चार से आठ हुए और इस तरह पूरे कल्प में हमारी एक वंशावली तैयार हुई। हम अपनी वंशावली के बीज हैं अर्थात् पूर्वज हैं। हमारा प्रभाव सम्पूर्ण वंशावली पर पड़ता रहता है। हम पूर्वजों की स्थिति कल्पवृक्ष की जड़ों में है या यों कहें कि पूरा कल्पवृक्ष हमारे सिर पर है। हमारी स्थिति के, हमारी पवित्रता के हमारी शक्तियों के व हमारे पुण्य कर्मों के वायब्रेशन्स सारे कल्पवृक्ष में फैलते रहते हैं इसलिए बाबा ने दो बातें कहीं - तुम पूर्वजों की ओर अब सर्व धर्मों की आत्माएं आकर्षित हैं और यदि तुम पूर्वज की स्मृति में रहो तो सारे कल्पवृक्ष को स्वत: सकाश मिलती रहेगी। हमें पूरे विश्व को सकाश देनी है। इसकी विधि बाबा ने कई बार इस प्रकार बताई है - अपने सामने ग्लोब (विश्व के गोले) को इमर्ज करो। स्वयं को योगयुक्त कर स्वमान में स्थित करें कि मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ, मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, मैं विश्व कल्याणकारी हूँ और अभ्यास करें कि मेरी मस्तक से व दोनों आँखों से किरणें निकलकर ग्लोब पर पड़ रही है। सहज करने के लिए दस बार करें, थोड़ा-थोड़ा समय। विश्वास रखें कि आपकी सकाश सारे विश्व को जायेगी।

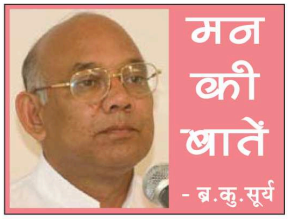

प्रश्न:- सभी धर्मों में प्रार्थनाएं की जाती है तो क्या उससे परमात्म-शक्ति या आशीर्वाद नहीं मिलता?

उत्तर: - भारत में मंदिरों की संख्या बढ़ रही है, परन्तु पश्चिमी देशों में चर्च की संख्या घट रही है। प्रार्थनाएं, धार्मिक कथाओं का आयोजन, पूजापाठ इन सबकी कमी नहीं है। कमी है तो सिर्फ विचारों की शुद्धि की। सात्विकता न होने कारण भक्ति, फल नही दिखा रही है। सकाम भक्ति ज्यादा है, निष्काम अति न्यूनतम। मांग ज्यादा है, हर मनुष्य प्यासी नजरों से भगवान की ओर देखता है, वह ऊपर नजर करके कहता है - हे प्रभु मुझे शक्ति दो, मैं बहुत निर्बल हूँ, मुझे शान्ति दो, आशीर्वाद दो, मुझ पर दया करो। हर भक्त याचक बन गया है। परन्तु हां मांगने वाले को कुछ न कुछ मिलता अवश्य है और जो अल्प मिलता है, वह एक दो दिन में ही समाप्त हो जाता है। भगवान रहमदिल है, दाता है, वह आशीर्वाद भी देता है, परन्तु अब केवल मांगने से ही तो सब कुछ नहीं मिल जायेगा।

प्रश्न - अनासक्त वृत्ति क्या है? इसके क्या लाभ हैं और सहज अनासक्त होने का उपाय क्या है?

उत्तर -हम पूरा जीवन, सारा दिन वस्तुओं व वैभवों का उपयोग करते हैं, हम भोजन करते हैं व मनुष्यों के साथ रहते हैं। अनासक्त वृत्ति का सम्बन्ध वस्तु, भोजन व वैभवों से है। इन सबका उपयोग करते हुए इनमें लिप्त न होना, न्यारा हो जाना -ये है अनासक्त वृत्ति।

उदाहरणार्थ -हम भोजन करते हैं, स्वादिष्ट भोजन तो सबको प्रिय है और अच्छा भोजन ही खाना भी चाहिए, परन्तु यदि कभी सीधा सादा भोजन मिले या मनपसंद का न मिले तो मूड ऑफ न हो जाए। हर तरह के भोजन में आनंद लें, ये है अनासक्त वृत्ति। हमें ये-ये मीठा चाहिए ही इसके बिना भोजन में कोई रस नहीं -ये आसक्ति है। चाहे छत्तीस प्रकार के भोजन मिलें या दाल-रोटी -दोनों में समान आनंद। चाहे हजारों की सभा में भाषण करने को मिले या झाड़ू लगाने की सेवा हो - दोनों में समभाव व समान आनंद -ये है अनासक्त वृत्ति। इसी तरह वस्त्र पहनना, गाड़ी आदि साधन रखना -ये सब चीजें समुचित रूप से कार्य को चलाने के साधन हैं। ये हों तो हम सुखी हैं -यदि ऐसा है तो आसक्त भाव है या उनमें कुछ ऊपर-नीचे हो जाए तो हम परेशान रहने लगें -ये है आसक्त भाव। इन्हें यूज किया और इसके प्रभाव से न्यारे हो गये -ये है अनासक्त वृत्ति। हमारे पास सब कुछ हो, हम उन्हें यूज भी करें परन्तु उनमें अटके नहीं, उन्हें जीवन का आधार न बना लें -ये है अनासक्त भाव।

भोजन केवल उदरपूर्ति के लिए है, जीभ रस के लिए नहीं। साधन विनाशी हैं -आत्म सुख या आत्म-उन्नति के लिए नहीं हैं। आत्म-सुख तो अशरीरी होने में या योगयुक्त होने में है। ये सभी साधन एक दिन नहीं रहेंगे - यह पक्का कर दें। हमें केवल इन्हें यूज करना है -इनमें फँसना नहीं है। ये अभ्यास करने से कर्मेन्द्रियों के रस समाप्त होने लगेंगे और हम अनासक्त योगी बन जाएंगे। कुछ है तो भी ठीक, नहीं है तो और भी ठीक।

अफवाहें..

-पेज 5 का शेष

लड़के ने माथे को सिकोड़ते हुए कहा-''अरे भाई, मेमना थोड़े ही है; ये तो गाय की बछड़ी है। इसकी तो 2000 रुपये कीमत है। मैं इसे 500 रुपये में कैसे दे दूँगा?'' ठग बोला-''तब तो तुमने बेच लिया ! तुम्हें ये भी मालूम नहीं कि ये मेमना है या बछड़ी और चले हो सौदा करने ! क्या कमाल है ! ऐसे थोड़े ही व्यापारी बन जाओगे। पहले कुछ सीखो।'' ये कहते हुए ठग आगे बढ़ गया। लड़का अब सोच में पड़ गया कि-''ये बात क्या है? पहला व्यक्ति इसे मेमना कह रहा था और यह भी इसे मेमना ही कह रहा है !''

कुछ समय के बाद तीसरा ठग आ मिला। वह बोला-''राम-राम बेटा, जीते रहो, कहाँ जा रहे हो?'' वह लड़का बोला-''इस बछड़ी को पशु मण्डी में बेचने जा रहा हूँ।'' ठग बोला-''फिर तो तुम्हारा हमारा अच्छा मेल हो गया। तुम्हें बेचना है; हमें लेना है। बोलो-''इस मेमने के 500 रुपये दे दूँ? लड़का थोड़ा हताश और निराश था और खीज कर बोला-''क्या बात करते हो, ये मेमना थोड़े ही है, ये तो बछड़ी है, बड़ी सुशील है; किसी को न सींग मारती है न पूँछ और आगे चलकर बहुत दूध देगी। 2000 रुपये देने हों तो बात करो !'' ठग बड़ी जोर-जोर से हंसने लगा। बोला-''इस उम्र में तुम्हें ये भी नहीं पता कि ये बछड़ी है या मेमना है। तुम गाँव के छोरे हो, शहर में जाकर तो लुट जाओगे। अरे बेटा, इतना तो समझ लो कि ये तो मेमना है। भले ही तुम इसे मेरे पास नहीं बेचो, बात समझ में आये तो ले दे के किस्सा खत्म करो वरना तुम्हारी मर्ज़ी; मालिक तुम हो।

लड़के ने सोचा-''ये बात तो ठीक तरह से करता है, मैं अभी छोटा हूँ; गलतफ़हमी हो गई होगी। ये तीनो आदमी, एक-के-बाद एक, झूठ थोड़े ही बोल सकते हैं? ये तो बात करके चले जाते हैं। ठीक ही कहते होंगे। ये सोचकर वह बोला, अच्छा ताऊ, अगर तुम सच कहते हो कि ये मेमना है तो चलो लाओ 500 रुपये।'' उसने 500 रुपये निकाले और लड़के ने ले लिये। इस प्रकार वह लड़का उनके बहकावे में आ गया और खुशी से इतराते हुए घर जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसे मालूम हुआ कि कैसे वह ग़लतफ़हमी में आ गया।

कुछ लोग छोटे बच्चों से हँसी-विनोद करते हुए अचानक ही चेहरा बना कर उन्हें कहते हैं-''अरे देखो, देखो-देखो, अरे, कौवा तेरे कान ले गया ! भागो-भागो, पकड़ो कौवे को।'' वह छोटा बच्चा, अक्ल का कच्चा, अपने कान नहीं संभालता और बहकावे में आकर पास में पड़ा हुआ रोड़ा उठाकर कौवे को मारने दौड़ता है और कहता है-''दे दो मेरे कान वरना ये रोड़ा मारूंगा। देते हो या नहीं? तब सब हंस पड़ते हैं और उसे पास बुलाकर प्यार से कहते हैं-''देखो तुम अपने हाथ से टटोल कर, तुम्हारे कान तो अपनी जगह पर हैं, तुम बुद्धू हो! बुद्धू! तब वह चिढ़ जाता है और कहता है कि-''तुम मुझे धोखा देते हो और फिर बुद्धू कहते हो !''

इस प्रकार संसार में बुद्धू बनाने वाले बहुत हैं। कई व्यक्ति शारीरिक आयु की दृष्टि से बड़े होते हैं परंतु वे होते बाल-बुद्धि हैं। वे अपने कान नहीं संभालते, गुमराह हो जाते हैं, धोखा खा जाते हैं। तब वे कहते हैं कि ''हम गलतफ़हमी का शिकार हो गये थे।''